शिक्षक को अभिभावक का एक पत्र

अजीत होरो*

मैं हूँ बच्चे का अभिभावक
कविता नई सुनाता हूँ
क्या है? आपसे आशा मेरी
कुछ बातें बतलाता हूँ!

बहुत प्रसन्न हूँ मैं कि
मेरा, बच्चा आपके पास है
शिक्षा से वह निखर उठेगा
ऐसी मेरी आस है!

ब्रह्म वाक्य है उसके लिए
जो भी आप कहते हैं
इन बच्चों के कोमल हृदय में
आप विशेष ही रहते हैं!

आप गुरु हैं और गुरु होते हैं
हमेशा से ईश्वर तुल्य
आपसे बच्चे सीखेंगे
जीवन के सच्चे मूल्य!

बच्चों का मन होता है
जिज्ञासा का भरा पिटारा
उस पिटारे में है भरा
कौतूहल ढेर सारा!

**औडियो-रेडियो प्रोड्यूसर*, सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प, नई दिल्ली 110 016

यदि वे पूछें प्रश्न बहुत से
कभी न जाइए उनसे खीज
प्रश्नों की इन झड़ियों से ही
उगता उनमें ज्ञान का बीज!

पुस्तकें उन्हें बहुत हैं पढ़नी
ये आप जरूर सिखाइए
पर है प्रकृति कितनी सुंदर
ये भी जरूर दिखाइए!

उन्हें सिखाना निरीक्षण करना
और है अवलोकन करना
रंगहीन किसी चित्र में
रंगों को कैसे है भरना?

सीखें वे कि कैसे गुलाब
काँटों में भी मुस्काता है
लदता फलों से जब तरुवर
हो विनम्र झुक जाता है!

शिक्षा में है जोड़नी अब
नई-नई तकनीक
इससे मिलेगी बच्चों को
नवाचार की सीख!

सबसे बढ़कर उन्हें सिखाना
प्रेम आपस में करना
कितनी हों प्रतिकूल धाराएँ
उनसे कभी न डरना!